॥ श्रीः ॥

चौखम्भा राजसेवा ग्रन्थमाला

७१

श्रीगङ्गासहस्रनामावलिः

(स्कन्दपुराणोक्तं गङ्गास्तोत्रसहितम्)

सम्पादक

डॉ० कपिलदेव गिरि

(काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी–५)

चौखम्भा ओरियन्टालिया

वाराणसी दिल्ली

प्रकाशक
चौखम्भा ओरियन्टालिया
पो० बाक्स नं० १०३२
वाराणसी--२२१ ००१ (भारत)
फोन : ६३३५४ टेलीग्राम : गोकुलोत्सव

शाखा—बंगलो रोड, ९ यू० बी० जवाहर नगर
(करोड़ीमल कालेज के पास)
दिल्ली—११० ००७ फोन : २९११६१७

प्रथम संस्करण १९८७
मूल्य रु० ४-००

मुद्रक—श्रीगोकुल मुद्रणालय, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी–२२१ ००१

गङ्गा की महिमा

गंगा स्वर्ग की देवी हैं, सुरसरी हैं। इनकी कीर्तिकथा, यानि भूतल पर अवतरण की कथाएँ रहस्यों से भरी हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

भगवान् विष्णु का वामन रूप बलि के समक्ष धीरे-धीरे विराट् रूप में परिणत हो गया। इन्होंने एक पैर से पृथिवी को, दूसरे पैर से सम्पूर्ण लोक को बलि के देखते देखते नाप लिये। बाहुओं से दिशाएँ और शरीर से तमाम आकाश भी नाप लिया।

पृथिवी नापने के बाद ऊपर की ओर सत्यलोक नापने जब त्रिविक्रम विष्णु

प्रकाशक
चौखम्भा ओरियन्टालिया
पो० बाक्स नं० १०३२
वाराणसी–२२१ ००१ (भारत)
फोन : ६३३५४ टेलीग्राम : गोकुलोत्सव

शाखा—बंगलो रोड, ९ यू० बो० जवाहर नगर
(करोड़ीमल कालेज के पास)
दिल्ली–११० ००७ फोन : २९११६१७

प्रथम संस्करण १९८७
मूल्य रु० ४–००

मुद्रक—श्रीगोकुल मुद्रणालय, गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी–२२१ ००१

गङ्गा की महिमा

गंगा स्वर्ग की देवी हैं, सुरसरी हैं। इनकी कीर्तिकथा, यानि भूतल पर अवतरण की कथाएँ रहस्यों से भरी हैं। इनमें से कुछ इस प्रकार हैं—

भगवान् विष्णु का वामन रूप बलि के समक्ष धीरे-धीरे विराट् रूप में परिणत हो गया। इन्होंने एक पैर से पृथिवी को, दूसरे पैर से सम्पूर्ण लोक को बलि के देखते देखते नाप लिये। बाहुओं से दिशाएँ और शरीर से तमाम आकाश भी नाप लिया।

पृथिवी नापने के बाद ऊपर की ओर सत्यलोक नापने जब त्रिविक्रम विष्णु

का चरण पहुँचा तब उसके आधात से ब्रह्माण्ड फट गया और उसछिद्र से चिन्मयीधारा निकल पड़ी तथा भगवान् के चरणों को धोती हुई आगे बढ़ी।

इस अचिन्त्य दैवी लीला से ब्रह्माजी चकित हुए। फिर उस जल से श्रीभगवान् के चरणों को धोया और बचे पवित्र जल (चरणामृत) को अपने कमण्डलु में भर लिया। ब्रह्माजी ने बड़े प्रेम से उस जल का पूजन किया तथा उसकी स्तुति की। सनकादिक महर्षियों ने भी भगवान् के श्रीचरणों का पूजन-अर्चन किया।

देवीभागवत में कहा है कि गोलोक में रासोत्सव हो रहा था। वहाँ ब्रह्माजी के कहने से शिवजी ने गीत गाया। शिव का गीत बड़ा मनोहारी एवं हृदयावर्जक था, जिसे सुनकर राधा-कृष्ण आनंद बिभोर हो गए; उनसे जो आनंद द्रवीभूत हुआ, वह पिघलकर जमीन पर छा गया; वही गंगा जल है। कहने का मतलब कि भगवद्रव ही गंगा जल के रूप में किंवा भगवच्चरणों को प्रक्षालित करनेवाला

ब्रह्मकमण्डलुस्थित जल ही गंगा रूप में हमारे सामने उपस्थित है, जो तीनों लोकों को पवित्र कर रहा है।

गंगाजी विष्णु के चरणों से जुड़े होने के कारण 'विष्णुपदी' नाम से पुकारी जाती हैं। यह ब्रह्मद्रव स्वर्ग में मन्दाकिनी, पाताल में भोगवती तथा भूलोक में 'गंगा' के रूप में बह रहा है—

मन्दाकिनीति दिवि भोगवतीति चाधो।
गङ्गेति चेह चरणाम्बु पुनाति विश्वम्॥
(भाग० स्कन्ध ८, अ० २१)

कालान्तर में वही गंगाजल (ब्रह्मतोय) शिवजी ने प्रेम से अपने माथे पर

धारण किया और बार-बार भगीरथ की तपस्या से प्रसन्न शिव ने अपनी जटा का

एक बाल तोड़कर पुनः भूतल पर लोकमंगल के लिए उतारा। इस प्रकार गंगा का जो क्षीण प्रवाह सर्वप्रथम पृथिवी पर आया, उसे ही 'अलकनन्दा' कहते हैं। बाद में भगीरथ के कथनानुसार गंगा ने बृहद्-वेग-प्रवाह धारण किया। तब से गंगा 'भागीरथी' कहलाती हैं। जह्नु ऋषि के जंघा से निकली हैं अतएव 'जाह्नवी' कहलाती हैं। गीता में भगवान् श्रीकृष्ण कहते हैं नदियों में मैं गंगा हूँ :—

'स्रोतसामस्मि जाह्नवी'। (गीता अ० १०, श्लोक ३१)

यह गंगा हिमालय से हरिद्वार, प्रयाग, विन्ध्याचल, काशी, पटना होते अन्त में बंगाल की भूमि में जाकर गंगासागर में मिल गई हैं जहाँ कपिल मुनि के श्राप से भगीरथ के पूर्वज भस्मीभूत हुए थे। वहाँ गंगा अपने स्पर्श से (जलसे) उन्हें तारती हैं यानी सगर के साठ हजार पुत्रों को अकालमृत्युजन्य पाप से उद्धार करती हैं, सद्गति देती हैं।

इसीलिए हिन्दुओं को गंगा प्रिय हैं और इनको माता के रूप में मानते-पूजते हैं। इनके नामों को लेने से, यानी 'गंगा गंगा' ऐसा मुंह से उच्चारण करने से तथा इनके पवित्र जल में नहाने से करोड़ों जन्म के पाप छूट जाते हैं और अंत में विष्णुलोक-वैकुंठधाम प्राप्त होता है :—

गङ्गा गङ्गेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति॥

अगस्त्य जी ने स्कन्दजी से पूछा कि जो लोग गंगा से दूर रहते हैं, पंगु हैं, रोगी हैं, वे इनके पवित्र जल में डुबकी लगाने से वंचित हैं, उनके कल्याण के लिए कौन सा उपाय है? इस पर स्कन्दजी ने गंगा के नामों को ही श्रद्धा पूर्वक जपने के लिए कहा है।

यहाँ प्रस्तुत 'श्रीगंगासहस्रनामावलिः' काशीखंड से संकलित है जो स्कन्दप्रोक्त है। साथ ही गङ्गास्तोत्र भी है। संस्कृतानुरागी भक्तों के लिए 'श्रीगंगा-सहस्रनामस्तोत्रम्' अलग से छपी है उसे अवलोकन करना चाहिए। जो लोग नित्य गंगा का नाम जपना चाहते हैं उनके लिए ॐकारयुक्त यह सहस्रनामावली है। श्लोक अकारादि वर्णित छन्दों में हैं अतएव नामावली भी अकारादिक्रम से है। काशीखंड सबको सुलभ नहीं होनेवाला है अतएव इसे सुलभ कर दिया। इसे सुलभ करने में श्री गणपतिशंकर त्रिवेदी का पूर्ण सहयोग रहा है। आशा है यह सबको सुख-शांति एवं मोक्ष का संबल बनेगा तथा हम सबके परिश्रम को सार्थक बनायेगा। इति शिवम्।

विजयादशमी
दिनांक २-१०-५७

विनीत—
कपिलदेव गिरि

गंगासहस्रनामावलिः

॥ अथ ध्यानम् ॥

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां
करधृतकलशोद्यत्सोत्पलाभीत्यभीष्टाम् ।
विधिहरिहररूपां सेन्दुकोटीरजूटां
कलितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि ॥ १ ॥

अथ संकल्पम्
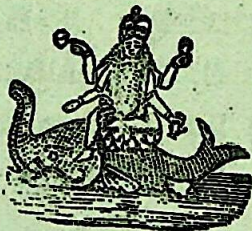
एवंगुणविशेषणविशिष्टायां शुभतिथौ मम वर्णाश्रमोचितकर्मानुष्ठानश्रद्धाद्वारकतदनुष्ठानजनितचित्तशुद्धिसंपादितसाधनचतुष्टयसमासादितात्मविचारणासंजातप्रत्यक्ब्रह्मैक्यानुसंधाननिष्ठानिरस्ताशेषानर्थव्राततासमुद्बोधिताखण्डानन्दसाक्षात्काररूपब्रह्मप्राप्त्यर्थं सर्वेप्सितकामनासिद्ध्यर्थं श्रीगंगासहस्रनाम जप-पूजां करिष्ये ।

ॐ ॐकाररूपिण्यै नमः
ॐ अजरायै नमः
ॐ अतुलायै नमः
ॐ अनन्तायै नमः
ॐ अमृतस्रवायै नमः
ॐ अत्युदारायै नमः
ॐ अभयायै नमः
ॐ अशोकायै नमः
ॐ अलकनन्दायै नमः
ॐ अमृतायै नमः १०
ॐ अमलायै नमः
ॐ अनाथवत्सलायै नमः
ॐ अमोघायै नमः
ॐ अपायोनये नमः
ॐ अमृतप्रदायै नमः
ॐ अव्यक्तलक्षणायै नमः
ॐ अक्षोभ्यायै नमः
ॐ अनवच्छिन्नायै नमः
ॐ अपरायै नमः
ॐ अजितायै नमः २०

ॐ अनाथनाथायै नमः
ॐ अभीष्टार्थसिद्धिदायै नमः
ॐ अनङ्गवर्धिन्यै नमः
ॐ अणिमादिगुणायै नमः
ॐ आधारायै नमः
ॐ अग्रगण्यायै नमः
ॐ अलीकहारिण्यै नमः
ॐ अचिन्त्यशक्तये नमः
ॐ अनघायै नमः
ॐ अद्भुतरूपायै नमः ३०

ॐ अघहारिण्यै नमः
ॐ अद्रिराजसुतायै नमः
ॐ अष्टाङ्गयोगसिद्धिप्रदायै नमः
ॐ अच्युतायै नमः
ॐ अक्षुण्णशक्तये नमः
ॐ असुदायै नमः
ॐ अनन्ततीर्थायै नमः
ॐ अमृतोदकायै नमः
ॐ अनन्तमहिम्ने नमः
ॐ अपारायै नमः ४०

ॐ अनन्तसौख्यप्रदायै नमः
ॐ अन्नदायै नमः
ॐ अशेषदेवतामूर्तये नमः
ॐ अघोरायै नमः
ॐ अमृतरूपिण्यै नमः
ॐ अविद्याजालशमन्यै नमः
ॐ अप्रतर्क्यगतिप्रदायै नमः
ॐ अशेषविघ्नसंहर्त्र्यै नमः
ॐ अशेषगुणगुम्फितायै नमः
ॐ अज्ञानतिमिरज्योतिषे नमः ५०

ॐ अनुग्रहपरायणायै नमः
ॐ अभिरामायै नमः
ॐ अनवद्याङ्ग्यै नमः
ॐ अनन्तसारायै नमः
ॐ अकलङ्किन्यै नमः
ॐ आरोग्यदायै नमः
ॐ आनन्दवल्ल्यै नमः
ॐ आपन्नार्तिविनाशिन्यै नमः
ॐ आश्चर्यमूर्तये नमः
ॐ आयुष्यायै नमः ६०

ॐ आढ्यायै नमः
ॐ आद्यायै नमः
ॐ आप्रायै नमः
ॐ आर्यसेवितायै नमः
ॐ आप्यायिन्यै नमः
ॐ आप्तविद्यायै नमः
ॐ आख्यायै नमः
ॐ आनन्दायै नमः
ॐ आश्वासदायिन्यै नमः
ॐ आलस्यघ्न्यै नमः ७०
ॐ आपदां हन्त्र्यै नमः
ॐ आनन्दामृतवर्षिण्यै नमः
ॐ इरावत्यै नमः
ॐ इष्टदात्र्यै नमः
ॐ इष्टायै नमः
ॐ इष्टापूर्तफलप्रदायै नमः
ॐ इतिहासश्रुतीड्यार्थायै नमः
ॐ इहामुत्रशुभप्रदायै नमः
ॐ इज्याशीलसमिज्येष्ठायै नमः
ॐ इन्द्रादिपरिवन्दितायै नमः ८०

ॐ इलालङ्कारमालायै नमः
ॐ इद्धायै नमः
ॐ इन्दिरारम्यमन्दिरायै नमः
ॐ इते नमः
ॐ इन्दिरादिसंसेव्यायै नमः
ॐ ईश्वर्यै नमः
ॐ ईश्वरवल्लभायै नमः
ॐ ईतिभीतिहरायै नमः
ॐ ईड्यायै नमः
ॐ ईडनीयचरित्रभृते नमः ९०
ॐ उत्कृष्टशक्तये नमः
ॐ उत्कृष्टायै नमः
ॐ उडुपमण्डलचारिण्यै नमः
ॐ उदिताम्बरमार्गायै नमः
ॐ उस्रायै नमः
ॐ उरगलोकविहारिण्यै नमः
ॐ उक्षायै नमः
ॐ उर्वरायै नमः
ॐ उत्पलायै नमः
ॐ उत्कुम्भायै नमः १००

ॐ उपेन्द्रचरणद्रवायै नमः
ॐ उदन्वत्पूर्तिहेतवे नमः
ॐ उदारायै नमः
ॐ उत्साहप्रवर्धिन्यै नमः
ॐ उद्वेगघ्न्यै नमः
ॐ उष्णशमन्यै नमः
ॐ उष्णरश्मिसुताप्रियायै नमः
ॐ उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिण्यै
ॐ उपरिचारिण्यै नमः
ॐ ऊर्जवहन्त्यै नमः ११०
ॐ ऊर्जधरायै नमः
ॐ ऊर्जावत्यै नमः
ॐ ऊर्मिमालिन्यै नमः
ॐ ऊर्ध्वरेतःप्रियायै नमः
ॐ ऊर्ध्वाध्वायै नमः
ॐ ऊर्मिलायै नमः
ॐ ऊर्ध्वगतिप्रदायै नमः
ॐ ऋषिवृन्दस्तुतायै नमः
ॐ ऋद्धये नमः
ॐ ऋणत्रयविनाशिन्यै नमः १२०

ॐ ऋतंभरायै नमः
ॐ ऋद्धिदात्र्यै नमः
ॐ ऋक्स्वरूपायै नमः
ॐ ऋजुप्रियायै नमः
ॐ ऋक्षमार्गवहायै नमः
ॐ ऋक्षार्चिषे नमः
ॐ ऋजुमार्गप्रदर्शिन्यै नमः
ॐ एधिताखिलधर्मार्थायै नमः
ॐ एकस्यै नमः
ॐ एकामृतदायिन्यै नमः १३०

ॐ एधनीयस्वभावायै नमः
ॐ एज्यायै नमः
ॐ एजिताशेषपातकायै नमः
ॐ ऐश्वर्यदायै नमः
ॐ ऐश्वर्यरूपायै नमः
ॐ ऐतिह्यायै नमः
ॐ ऐन्दवद्युतये नमः
ॐ ओजस्विन्यै नमः
ॐ ओषधीक्षेत्रायै नमः
ॐ ओजोदायै नमः १४०

ॐ ओदनदायिन्यै नमः
ॐ ओष्ठामृतायै नमः
ॐ औन्नत्यदात्र्यै नमः
ॐ भवरोगिणामौषधायै नमः
ॐ औदार्यचञ्चुरायै नमः
ॐ औपेन्द्रायै नमः
ॐ औग्र्यै नमः
ॐ औमेयरूपिण्यै नमः
ॐ अम्बराध्वहायै नमः
ॐ अम्बष्टायै नमः १५०

ॐ अम्बरमालायै नमः
ॐ अम्बुजेक्षणायै नमः
ॐ अम्बिकायै नमः
ॐ अम्बुमहायोनये नमः
ॐ अन्धोदायै नमः
ॐ अन्धकहारिण्यै नमः
ॐ अंशुमालायै नमः
ॐ अंशुमत्यै नमः
ॐ अङ्गीकृतषडाननायै नमः
ॐ अन्धतामिस्रहन्त्र्यै नमः १६०

ॐ अन्धवे नमः
ॐ अञ्जनायै नमः
ॐ अञ्जनावत्यै नमः
ॐ कल्याणकारिण्यै नमः
ॐ काम्यायै नमः
ॐ कमलोत्पलगन्धिन्यै नमः
ॐ कुमुद्वत्यै नमः
ॐ कमलिन्यै नमः
ॐ कान्तायै नमः
ॐ कल्पितदायिन्यै नमः १७०

ॐ काञ्चनाक्ष्यै नमः
ॐ कामधेनवे नमः
ॐ कीर्तिकृते नमः
ॐ क्लेशनाशिन्यै नमः
ॐ क्रतुश्रेष्ठायै नमः
ॐ क्रतुफलायै नमः
ॐ कर्मबन्धविभेदिन्यै नमः
ॐ कमलाक्ष्यै नमः
ॐ क्लमहरायै नमः
ॐ कृशानुतपनद्युतये नमः १८०

ॐ करुणार्द्रायै नमः
ॐ कल्याण्यै नमः
ॐ कलिकल्मषनाशिन्यै नमः
ॐ कामरूपायै नमः
ॐ क्रियाशक्तये नमः
ॐ कमलोत्पलमालिन्यै नमः
ॐ कूटस्थायै नमः
ॐ करुणायै नमः
ॐ कान्तायै नमः
ॐ कूर्मयानायै नमः । १९०
ॐ कलावत्यै नमः
ॐ कमलायै नमः
ॐ कल्पलतिकायै नमः
ॐ काल्यै नमः
ॐ कलुषवैरिण्यै नमः
ॐ कमनीयजलायै नमः
ॐ कम्रायै नमः
ॐ कपर्दिसुकपर्दगायै नमः
ॐ कालकूटप्रशमन्यै नमः
ॐ कदम्बकुसुमप्रियायै नमः २००

ॐ कालिन्द्यै नमः
ॐ केलिललितायै नमः
ॐ कलकल्लोलमालिकायै नमः
ॐ क्रान्तलोकत्रयायै नमः
ॐ कण्ड्वै नमः
ॐ कण्डूतनयवत्सलायै नमः
ॐ खड्गिन्यै नमः
ॐ खड्गधाराभायै नमः
ॐ खगायै नमः
ॐ खण्डेन्दुधारिण्यै नमः २१०

ॐ खेखेलगामिन्यै नमः
ॐ खस्थायै नमः
ॐ खण्डेन्दुतिलकप्रियायै नमः
ॐ खेचर्यै नमः
ॐ खेचरीवन्द्यायै नमः
ॐ ख्यात्यै नमः
ॐ ख्यातिप्रदायिन्यै नमः
ॐ खण्डितप्रणताघौघायै नमः
ॐ खलबुद्धिविनाशिन्यै नमः
ॐ खातैनःकन्दसंदोहायै २२०

ॐ खड्गखट्वाङ्गखेटिन्यै नमः
ॐ खरसन्तापशमन्यै नमः
ॐ पीयूषपाथसांखनये नमः
ॐ गङ्गायै नमः
ॐ गन्धवत्यै नमः
ॐ गौर्यै नमः
ॐ गन्धर्वनगरप्रियायै नमः
ॐ गम्भीराङ्ग्यै नमः
ॐ गुणमय्यै नमः
ॐ गतातङ्कायै नमः २३०

ॐ गतिप्रियायै नमः
ॐ गणनाथाम्बिकायै नमः
ॐ गीतायै नमः
ॐ गद्यपद्यपरिष्टुतायै नमः
ॐ गान्धार्यै नमः
ॐ गर्भशमन्यै नमः
ॐ गतिभ्रष्टगतिप्रदायै नमः
ॐ गोमत्यै नमः
ॐ गुह्यविद्यायै नमः
ॐ गवे नमः २४०

ॐ गौप्त्र्यै नमः
ॐ गगनगामिन्यै नमः
ॐ गोत्रप्रवर्धिन्यै नमः
ॐ गुण्यायै नमः
ॐ गुणातीतायै नमः
ॐ गुणाग्रण्यै नमः
ॐ गुहाम्बिकायै नमः
ॐ गिरिसुतायै नमः
ॐ गोविन्दाङ्घ्रिसमुद्भवायै नमः
ॐ गुणनीयचरित्रायै नमः २५०

ॐ गायत्र्यै नमः
ॐ गिरिशप्रियायै नमः
ॐ गूढरूपायै नमः
ॐ गुणवत्यै नमः
ॐ गुर्व्यै नमः
ॐ गौरववर्धिन्यै नमः
ॐ ग्रहपीडाहरायै नमः
ॐ गुन्द्रायै नमः
ॐ गारुड्यै नमः
ॐ गानवत्सलायै नमः २६०

ॐ घर्महन्त्र्यै नमः
ॐ घृतवत्यै नमः
ॐ घृततुष्टिप्रदायिन्यै नमः
ॐ घण्टारवप्रियायै नमः
ॐ घोराघौघविध्वंसकारिण्यै नमः
ॐ घ्राणतुष्टिकर्यै नमः
ॐ घोषायै नमः
ॐ घनानन्दायै नमः
ॐ घनाप्रियायै नमः
ॐ घातुकायै नमः २७०

ॐ घूर्णितजलायै नमः
ॐ घृष्टपातकसन्तत्यै नमः
ॐ घटकोटिप्रपीतापायै नमः
ॐ घटिताशेषमङ्गलायै नमः
ॐ घृणावत्यै नमः
ॐ घृणिनिधये नमः
ॐ घस्मरायै नमः
ॐ घूकनादिन्यै नमः
ॐ घुसृणापिञ्जरतनवे नमः
ॐ घर्घरायै नमः २८०

ॐ घर्घरस्वनायै नमः
ॐ चन्द्रिकायै नमः
ॐ चन्द्रकान्ताम्बवे नमः
ॐ चञ्चदापायै नमः
ॐ चलद्युतये नमः
ॐ चिन्मय्यै नमः
ॐ चितिरूपायै नमः
ॐ चन्द्रायुतशताननायै नमः
ॐ चाम्पेयलोचनायै नमः
ॐ चारवे नमः २९०

ॐ चार्वङ्ग्यै नमः
ॐ चारुगामिन्यै नमः
ॐ चार्यायै नमः
ॐ चारित्रनिलयायै नमः
ॐ चित्रकृते नमः
ॐ चित्ररूपिण्यै नमः
ॐ चम्प्वै नमः
ॐ चन्दनशुच्यम्बवे नमः
ॐ चर्चनीयायै नमः
ॐ चिरस्थिरायै नमः ३००

ॐ चारुचम्पकमालाढ्यायै नमः
ॐ चमिताशेषदुष्कृतायै नमः
ॐ चिदाकाशवहायै नमः
ॐ चिन्त्यायै नमः
ॐ चञ्चते नमः
ॐ चामरवीजितायै नमः
ॐ चोरिताशेषवृजिनायै नमः
ॐ चरिताशेषमण्डलायै नमः
ॐ छेदिताखिलपापौघायै नमः
ॐ छद्मघ्न्यै नमः ३१०

ॐ छलहारिण्यै नमः
ॐ छन्नत्रिविष्टपतलायै नमः
ॐ छोटिताशेषबन्धनायै नमः
ॐ छुरितामृतधारौघायै नमः
ॐ छिन्नैनसे नमः
ॐ छन्दगामिन्यै नमः
ॐ छत्रीकृतमरालौघायै नमः
ॐ छटीकृतनिजामृतायै नमः
ॐ जाह्नव्यै नमः
ॐ ज्यायै नमः ३२०

ॐ जगन्मात्रे नमः
ॐ जप्यायै नमः
ॐ जङ्घालवीचिकायै नमः
ॐ जयायै नमः
ॐ जनार्दनप्रीतायै नमः
ॐ जुषणीयायै नमः
ॐ जगद्धितायै नमः
ॐ जीवनायै नमः
ॐ जीवनप्राणायै नमः
ॐ जगते नमः ३३०
ॐ ज्येष्ठायै नमः
ॐ जगन्मय्यै नमः
ॐ जीवजीवातुलतिकायै नमः
ॐ जन्मिजन्मनिबर्हिण्यै नमः
ॐ जाड्यविध्वंसनकर्यै नमः
ॐ जगद्योनये नमः
ॐ जलाविलायै नमः
ॐ जगदानन्दजनन्यै नमः
ॐ जलजायै नमः
ॐ जलजेक्षणायै नमः ३४०

ॐ जनलोचनपीयूषायै नमः
ॐ जटातटविहारिण्यै नमः
ॐ जयन्त्यै नमः
ॐ जह्नुपूकघ्न्यै नमः
ॐ जनितज्ञानविग्रहायै नमः
ॐ झल्लरीवाद्यकुशलायै नमः
ॐ झलज्झालजलावृतायै नमः
ॐ झिण्टीशवन्द्यायै नमः
ॐ झाङ्कारकारिण्यै नमः
ॐ झर्झरावत्यै नमः ३५०

ॐ टिकिताशेषपातालायै नमः
ॐ एनोद्रिपाटनेटङ्किकायै नमः
ॐ टङ्कारनृत्यत्कल्लोलायै नमः
ॐ टीकनीयमहातटायै नमः
ॐ डम्बरप्रवहायै नमः
ॐ डीनराजहंसकुलाकुलायै नमः
ॐ डमड्डमरुहस्तायै नमः
ॐ डामरोक्तमहाण्डकायै नमः
ॐ ढौकिताशेषनिर्वाणायै नमः
ॐ ढक्कानादचलज्जलायै नमः

ॐ ढुण्ढिविघ्नेशजनन्यै नमः
ॐ ढणढ्ढुणितपातकायै नमः
ॐ तर्पण्यै नमः
ॐ तीर्थतीर्थायै नमः
ॐ त्रिपथायै नमः
ॐ त्रिदशेश्वर्यै नमः
ॐ त्रिलोकगोप्त्र्यै नमः
ॐ तोयेश्यै नमः
ॐ त्रैलोक्यपरिवन्दितायै नमः
ॐ तापत्रितयसंहर्त्र्यै नमः ३७०
ॐ तेजोबलविवर्धिन्यै नमः
ॐ त्रिलक्ष्यायै नमः
ॐ तारण्यै नमः
ॐ तारायै नमः
ॐ तारापतिकरार्चितायै नमः
ॐ त्रैलोक्यपावनीपुण्यायै नमः
ॐ तुष्टिदायै नमः
ॐ तुष्टिरूपिण्यै नमः
ॐ तृष्णाछेत्र्यै नमः
ॐ तीर्थमात्रे नमः ३८०

ॐ त्रिविक्रमपदोद्भवायै नमः
ॐ तपोमय्यै नमः
ॐ तपोरूपायै नमः
ॐ तपस्तोमफलप्रदायै नमः
ॐ त्रैलोक्यव्यापिन्यै नमः
ॐ तृप्त्यै नमः
ॐ तृप्तिकृते नमः
ॐ तत्वरूपिण्यै नमः
ॐ त्रैलोक्यसुन्दर्यै नमः
ॐ तुर्यायै नमः ३९०
ॐ तुर्यातीतपदप्रदायै नमः
ॐ त्रैलोक्यलक्ष्म्यै नमः
ॐ त्रिपद्यै नमः
ॐ तथ्यायै नमः
ॐ तिमिरचन्द्रिकायै नमः
ॐ तेजोगर्भायै नमः
ॐ तपःसारायै नमः
ॐ त्रिपुरारिशिरोगृहायै नमः
ॐ त्रयीस्वरूपिण्यै नमः
ॐ तन्व्यै नमः ४००

ॐ पिनाङ्गजभीतिनुदे नमः
ॐ तरये नमः
ॐ तरणिजामित्रायै नमः
ॐ तर्पिताशेषपूर्वजायै नमः
ॐ तुलाविरहितायै नमः
ॐ तीव्रपापतूलतनूनपाते नमः
ॐ दारिद्र्यदमन्यै नमः
ॐ दक्षायै नमः
ॐ दुष्प्रेक्षायै नमः
ॐ दिव्यमण्डनायै नमः ४१०
ॐ दीक्षावत्यै नमः
ॐ दुरावाप्यायै नमः
ॐ द्राक्षामधुरवारिभृते नमः
ॐ दर्शितानेककुतुकायै नमः
ॐ दुष्टदुर्जयदुःखहृते नमः
ॐ दैन्यहृते नमः
ॐ दुरितघ्न्यै नमः
ॐ दानवारिपदाब्जजायै नमः
ॐ नन्दशूकविषघ्न्यै नमः
ॐ दारिताघौघसन्तत्यै नमः ४२०

ॐ द्रुतायै नमः
ॐ देवद्रुमच्छन्नायै नमः
ॐ दुर्वाराघविघातिन्यै नमः
ॐ दमग्राह्यायै नमः
ॐ देवमात्रे नमः
ॐ देवलोकप्रदर्शिन्यै नमः
ॐ देवदेवप्रियायै नमः
ॐ देव्यै नमः
ॐ दिक्पालपददायिन्यै नमः
ॐ दीर्घायुष्कारिण्यै नमः ४३०

ॐ दीर्घायै नमः
ॐ दोग्ध्र्यै नमः
ॐ दूषणवर्जितायै नमः
ॐ दुग्धाम्बुवाहिन्यै नमः
ॐ दोह्यायै नमः
ॐ दिव्यायै नमः
ॐ दिव्यगतिप्रदायै नमः
ॐ द्युनद्यै नमः
ॐ दीनशरणायै नमः
ॐ देहिदेहनिवारिण्यै नमः ४४०

ॐ द्राघीयस्यै नमः
ॐ दाघहन्त्र्यै नमः
ॐ दितपातकसंतत्यै नमः
ॐ दूरदेशान्तरचर्यै नमः
ॐ दुर्गमायै नमः
ॐ देववल्लभायै नमः
ॐ दुर्वृत्तघ्न्यै नमः
ॐ दुर्विगाह्यै नमः
ॐ दयाधारायै नमः
ॐ दयावत्यै नमः ४५०

ॐ दुरासदायै नमः
ॐ दानशीलायै नमः
ॐ द्राविण्यै नमः
ॐ द्रुहिणस्तुतायै नमः
ॐ दैत्यदानवसंशुद्धिकर्त्र्यै नमः
ॐ दुर्बुद्धिहारिण्यै नमः
ॐ दानसारायै नमः
ॐ दयासारायै नमः
ॐ द्यावाभूमावगाहिन्यै नमः
ॐ दृष्टादृष्टफलप्राप्त्यै नमः

ॐ देवतावृन्दवन्दितायै नमः
ॐ दीर्घव्रतायै नमः
ॐ दीर्घदृष्टयै नमः
ॐ दीप्ततोयायै नमः
ॐ दुरालभायै नमः
ॐ दण्डयित्र्यै नमः
ॐ दण्डनीतये नमः
ॐ दुष्टदण्डधरार्चितायै नमः
ॐ दुरोदरघ्न्यै नमः
ॐ दावार्चिषे नमः ४७०

ॐ द्रवते नमः
ॐ द्रव्यैकशेवधये नमः
ॐ दीनसन्तापशमन्यै नमः
ॐ दात्र्यै नमः
ॐ दवथुवैरिण्यै नमः
ॐ दरीविदारणपरायै नमः
ॐ दान्तायै नमः
ॐ दान्तजनप्रियायै नमः
ॐ दारिताद्रितटायै नमः
ॐ दुर्गायै नमः ४८०

ॐ दुर्गारण्यप्रचारिण्यै नमः
ॐ धर्मद्रवायै नमः
ॐ धर्मधुरायै नमः
ॐ धेनवे नमः
ॐ धीरायै नमः
ॐ धृतये नमः
ॐ ध्रुवायै नमः
ॐ धेनुदानफलस्पर्शायै नमः
ॐ धर्मकामार्थमोक्षदायै नमः
ॐ धर्मोर्मिवाहिन्यै नमः ४९०
ॐ धुर्यायै नमः
ॐ धात्र्यै नमः
ॐ धात्रीविभूषणायै नमः
ॐ धर्मिण्यै नमः
ॐ धर्मशीलायै नमः
ॐ धन्विकोटिकृतावनायै नमः
ॐ ध्यातृपापहरायै नमः
ॐ ध्येयायै नमः
ॐ धावन्यै नमः
ॐ धूतकल्मषायै नमः ५००

ॐ धर्मधरायै नमः
ॐ धर्मसारायै नमः
ॐ धनदायै नमः
ॐ धनवर्धिन्यै नमः
ॐ धर्माधर्मगुणच्छेत्र्यै नमः
ॐ धत्तूरकुसुमप्रियायै नमः
ॐ धर्मेश्यै नमः
ॐ धर्मशास्त्रज्ञायै नमः
ॐ धनधान्यसमृद्धिकृते नमः
ॐ धर्मलभ्यायै नमः ५१०

ॐ धर्मजलायै नमः
ॐ धर्मप्रसवधर्मिण्यै नमः
ॐ ध्यानगम्यस्वरूपायै नमः
ॐ धरण्यै नमः
ॐ धातृपूजितायै नमः
ॐ धुरे नमः
ॐ धूर्जटिजटासंस्थायै नमः
ॐ धन्यायै नमः
ॐ धिये नमः
ॐ धारणावत्यै नमः ५२०

ॐ नन्दायै नमः
ॐ निर्वाणजनन्यै नमः
ॐ नन्दिन्यै नमः
ॐ नुन्नपातकायै नमः
ॐ निषिद्धविघ्ननिचयायै नमः
ॐ निजानन्दप्रकाशिन्यै नमः
ॐ नभोङ्गणचर्यै नमः
ॐ नूतये नमः
ॐ नम्यायै नमः
ॐ नारायण्यै नमः ५३०

ॐ नुतायै नमः
ॐ निर्मलायै नमः
ॐ निर्मलाख्यानायै नमः
ॐ तापसंपदांनाशिन्यै नमः
ॐ नियतायै नमः
ॐ नित्यसुखदायै नमः
ॐ नानाश्चर्यमहानिधये नमः
ॐ नद्यै नमः
ॐ नदसरोमात्रे नमः
ॐ नायिकायै नमः ५४०

ॐ नाकदीर्घिकायै नमः
ॐ नष्टोद्धरणधीरायै नमः
ॐ नन्दनायै नमः
ॐ नन्ददायिन्यै नमः
ॐ निर्णिक्ताशेषभुवनायै नमः
ॐ निस्सङ्गायै नमः
ॐ निरुपद्रवायै नमः
ॐ निरालम्बायै नमः
ॐ निष्प्रपञ्चायै नमः
ॐ निर्णाशितमहामलायै नमः
ॐ निर्मलज्ञानजनन्यै नमः
ॐ निश्शेषप्राणितापहृते नमः
ॐ नित्योत्सवायै नमः
ॐ नित्यतृप्तायै नमः
ॐ नमस्कार्यायै नमः
ॐ निरञ्जनायै नमः
ॐ निष्ठावत्यै नमः
ॐ निरातङ्कायै नमः
ॐ निर्लेपायै नमः
ॐ निश्चलात्मिकायै नमः ५६०

ॐ निरवद्यायै नमः
ॐ निरीहायै नमः
ॐ नीललोहितमूर्धगायै
ॐ नन्दिभृङ्गिगणस्तुत्यायै नमः
ॐ नागायै नमः
ॐ नन्दायै नमः
ॐ नगात्मजायै नमः
ॐ निष्प्रत्यूहायै नमः
ॐ नाकनद्यै नमः
ॐ निरयार्णवदीर्घनावे नमः ५७०

ॐ पुण्यप्रदायै नमः
ॐ पुण्यगर्भायै नमः
ॐ पुण्यायै नमः
ॐ पुण्यतरङ्गिण्यै नमः
ॐ पृथवे नमः
ॐ पृथुफलायै नमः
ॐ पूर्णायै नमः
ॐ प्रणतार्तिप्रभञ्जिन्यै नमः
ॐ प्राणदायै नमः
ॐ प्राणिजनन्यै नमः ५८०

ॐ प्राणेश्यै नमः
ॐ प्राणरूपिण्यै नमः
ॐ पद्मालयायै नमः
ॐ पराशक्तये नमः
ॐ पुरजित्परमप्रियायै नमः
ॐ परायै नमः
ॐ परफलप्राप्त्यै नमः
ॐ पावन्यै नमः
ॐ पयस्विन्यै नमः
ॐ परमानन्दायै नमः ५९०
ॐ प्रकृष्टार्थायै नमः
ॐ प्रतिष्ठायै नमः
ॐ पालन्यै नमः
ॐ परायै नमः
ॐ पुराणपठितायै नमः
ॐ प्रीतायै नमः
ॐ प्रणवाक्षररूपिण्यै नमः
ॐ पार्वत्यै नमः
ॐ प्रेमसम्पन्नायै नमः
ॐ पशुपाश विमोचिन्यैनमः६००

ॐ परमात्मस्वरूपायै नमः
ॐ परब्रह्मप्रकाशिन्यै नमः
ॐ परमानन्दनिष्पन्दायै नमः
ॐ प्रायश्चित्तस्वरूपिण्यै नमः
ॐ पानीयरूपनिर्वाणायै नमः
ॐ परित्राणपरायणायै नमः
ॐ पापेन्धनदवज्वालायै नमः
ॐ पापारये नमः
ॐ पापनामनुदे नमः
ॐ परमैश्वर्यजनन्यै नमः ६१०

ॐ प्रज्ञायै नमः
ॐ परापरायै नमः
ॐ प्रत्यक्षलक्ष्म्यै नमः
ॐ पद्माक्ष्यै नमः
ॐ परव्योमामृतस्रवायै नमः
ॐ प्रसन्नरूपायै नमः
ॐ प्रणिधये नमः
ॐ पूतायै नमः
ॐ प्रत्यक्षदेवतायै नमः
ॐ पिनाकिपरमप्रीतायै नमः ६२०

ॐ परमेष्ठीकमण्डल्वे नमः
ॐ पद्मनाभपदार्घ्येण प्रसूतायै०
ॐ पद्मनामालिन्यै नमः
ॐ पराद्धिंदायै नमः
ॐ पुष्टिकर्यै नमः
ॐ पथ्यायै नमः
ॐ पूर्त्तै नमः
ॐ प्रभावत्यै नमः
ॐ पुमानायै नमः
ॐ पीनगर्भघ्न्यै नमः ६३०

ॐ पापपर्वतनाशिन्यै नमः
ॐ फलिन्यै नमः
ॐ फलहस्तायै नमः
ॐ फलांबुजविलोचनायै नमः
ॐ फलितैनोमहाक्षेत्रायै नमः
ॐ फणिलोकविभूषणायै नमः
ॐ फेनच्छलप्रणुन्नैनायै नमः
ॐ फुल्लकैरवगन्धिन्यै नमः
ॐ फेनिलाच्छटाम्बुधारायै नमः
ॐ फडुच्चाटितपातकायै नमः ६४०

ॐ फाणितस्वादुसलिलायै नमः
ॐ फाण्टपथ्यजलाविलायै नमः
ॐ विश्वमातायै नमः
ॐ विश्वेश्वै नमः
ॐ विश्वायै नमः
ॐ विश्वप्रियायै नमः
ॐ ब्रह्मण्यायै नमः
ॐ ब्रह्मकृते नमः
ॐ ब्राह्मै नमः
ॐ ब्रह्मिष्ठायै नमः ६५०

ॐ विमलोदकायै नमः
ॐ विभावर्यै नमः
ॐ विरजायै नमः
ॐ विक्रान्तनेकविष्टपायै नमः
ॐ विश्वमित्रायै नमः
ॐ विष्णुपद्यै नमः
ॐ वैष्णव्यै नमः
ॐ वैष्णवप्रियायै नमः
ॐ विरूपाक्षप्रियकर्य्यै नमः
ॐ विभूत्यै नमः ६६०

ॐ विश्वतोमुख्यै नमः
ॐ विपाशायै नमः
ॐ वैबुध्यै नमः
ॐ वेद्यायै नमः
ॐ वेदाक्षररसस्रवायै नमः
ॐ विद्यायै नमः
ॐ वन्द्यायै नमः
ॐ बृंहण्यै नमः
ॐ ब्रह्मवादिन्यै नमः
ॐ वरदायै नमः ६७०

ॐ विप्रकृष्टायै नमः
ॐ वरिष्ठायै नमः
ॐ विशोधन्यै नमः
ॐ विद्याधर्यै नमः
ॐ विशोकायै नमः
ॐ वयोवृन्दनिषेवितायै नमः
ॐ बहूदकायै नमः
ॐ बलवत्यै नमः
ॐ व्योमस्थायै नमः
ॐ विबुधप्रियायै नमः ६८०

ॐ वाण्यै नमः
ॐ वेदवत्यै नमः
ॐ वाणीवेदवतीन्यै नमः
ॐ वितायै नमः
ॐ ब्रह्मविद्यान्तरङ्गिण्यै नमः
ॐ ब्रह्माण्डकोटिव्याप्ताम्बुधै नमः
ॐ ब्रह्महत्यापहारिण्यै नमः
ॐ ब्रह्मेशविष्णुरूपायै नमः
ॐ बुद्ध्यै नमः
ॐ विभवर्द्धिन्यै नमः ६९०

ॐ विलासिसुखदायिन्यै नमः
ॐ विश्वायै नमः
ॐ व्यापिन्यै नमः
ॐ विषारण्यै नमः
ॐ वृषांकमौलिनिलयायै नमः
ॐ विपन्नार्तिप्रभञ्जिन्यै नमः
ॐ विनीतायै नमः
ॐ विनतायै नमः
ॐ ब्रह्मभतनयायै नमः
ॐ विनयान्वितायै नमः ७००

ॐ विपञ्च्यै नमः
ॐ वाद्यकुशलायै नमः
ॐ वेणुश्रुतिविचक्षणायै नमः
ॐ वर्चस्कर्यै नमः
ॐ वलकर्यै नमः
ॐ बलोन्मूलितकल्मषायै नमः
ॐ विपाप्मने नमः
ॐ विगतातङ्कायै नमः
ॐ विकल्पपरिवर्जितायै नमः
ॐ वृष्टिकर्त्र्यै नमः ७१०
ॐ वृष्टिजलायै नमः
ॐ विधये नमः
ॐ विच्छिन्नबन्धनायै नमः
ॐ व्रतरूपायै नमः
ॐ वित्तरूपायै नमः
ॐ बहुविघ्नविनाशकृते नमः
ॐ वसुधारायै नमः
ॐ वसुमत्यै नमः
ॐ विचित्राङ्ग्यै नमः
ॐ विभावसवे नमः ७२०

ॐ विजयायै नमः
ॐ विश्वबीजायै नमः
ॐ वामदेव्यै नमः
ॐ वरप्रदायै नमः
ॐ वृषाश्रितायै नमः
ॐ विषघ्न्यै नमः
ॐ विज्ञानोर्म्यंशुमालिन्यै नमः
ॐ भव्यायै नमः
ॐ भोगवत्यै नमः
ॐ भद्रायै नमः ७३०
ॐ भवान्यै नमः
ॐ भूतभाविन्यै नमः
ॐ भूतधात्र्यै नमः
ॐ भयहरायै नमः
ॐ भक्तदारिद्र्यघातिन्यै नमः
ॐ भुक्तिमुक्तिप्रदायै नमः
ॐ भेश्यै नमः
ॐ भक्तस्वर्गापवर्गदायै नमः
ॐ भागीरथ्यै नमः
ॐ भानुमत्यै नमः ७४०.

ॐ भाग्याय नमः
ॐ भोगवत्यै नमः
ॐ भृतये नमः
ॐ भवप्रियायै नमः
ॐ भवद्वेष्ट्र्यै नमः
ॐ भूतिदायै नमः
ॐ भूतिभूषणायै नमः
ॐ भाललोचनभावज्ञायै नमः
ॐ भूतभव्यभवत्प्रभवे नमः
ॐ भ्रान्तिज्ञानप्रशमन्यै नमः ५०
ॐ भिन्नब्रह्माण्डमण्डपायै नमः
ॐ भूरिदायै नमः
ॐ भक्तिसुलभायै नमः
ॐ भाग्यवद्दृष्टिगोचर्यै नमः
ॐ भञ्जितोपप्लवकुलायै नमः
ॐ भक्ष्यभोज्यसुखप्रदायै नमः
ॐ भिक्षणियायै नमः
ॐ भिक्षुमात्रे नमः
ॐ भावायै नमः
ॐ भावस्वरूपिण्यै नमः ७६०

ॐ मन्दाकिन्यै नमः
ॐ महानन्दायै नमः
ॐ मात्रे नमः
ॐ मुक्तितरङ्गिण्यै नमः
ॐ महोदयायै नमः
ॐ मधुमत्यै नमः
ॐ महापुण्यायै नमः
ॐ मुदाकार्यै नमः
ॐ मुनिसुतायै नमः
ॐ मोहहन्त्र्यै नमः ७७०

ॐ महातीर्थायै नमः
ॐ मधुस्रवायै नमः
ॐ माधव्यै नमः
ॐ मानिन्यै नमः
ॐ मान्यायै नमः
ॐ मनोरथपथातिगायै नमः
ॐ मोक्षदायै नमः
ॐ मतिदायै नमः
ॐ मुख्यायै नमः ७७९
ॐ महाभाग्यजनाश्रितायै नमः

ॐ महावेगवत्यै नमः
ॐ मेध्यमायै नमः
ॐ महायै नमः
ॐ महिमभूषणायै नमः
ॐ महाप्रभावायै नमः
ॐ महत्यै नमः
ॐ मीनचञ्चललोचनायै नमः
ॐ महाकारुण्यसंपूर्णायै नमः
ॐ महर्द्ध्यै नमः
ॐ महोत्पलायै नमः ७९०

ॐ मूर्तिमते नमः
ॐ मुक्तिरमण्यै नमः
ॐ मणिमाणिक्यभूषणायै नमः
ॐ मुक्ताकलापनेपथ्यायै नमः
ॐ मनोनयननन्दिन्यै नमः
ॐ महापातकराशिघ्न्यै नमः
ॐ महादेवार्धहारिण्यै नमः
ॐ महोर्मिमालिन्यै नमः
ॐ मुक्तायै नमः
ॐ महादेव्यै नमः ८००

ॐ मनोन्मन्यै नमः
ॐ महापुण्योदयप्राप्यायै नमः
ॐ मायातिमिरचन्द्रिकायै नमः
ॐ महाविद्यायै नमः
ॐ महामायायै नमः
ॐ महामेधायै नमः
ॐ महौषधाय नमः
ॐ मालाधर्यै नमः
ॐ महोपायायै नमः ८०९
ॐ महोरगविभूषणायै नमः

ॐ महामोहप्रशमन्यै नमः
ॐ महामङ्गलमङ्गलाय नमः
ॐ मार्तण्डमण्डलचर्यै नमः
ॐ महालक्ष्म्यै नमः
ॐ मदोज्झितायै नमः
ॐ यशस्विन्यै नमः
ॐ यशोदायै नमः
ॐ योग्यायै नमः
ॐ युक्तात्मसेवितायै नमः
ॐ योगसिद्धिप्रदायै नमः ८२०

ॐ याज्यायै नमः
ॐ यज्ञेशपरिपूरितायै नमः
ॐ यज्ञेश्यै नमः
ॐ यज्ञफलदायै नमः
ॐ यजनीयायै नमः
ॐ यशस्कर्यै नमः
ॐ यमनिसेव्यायै नमः
ॐ योगयोनये नमः
ॐ योगिन्यै नमः
ॐ युक्तबुद्धिदायै नमः ८३०

ॐ योगज्ञानप्रदायै नमः
ॐ युक्तायै नमः
ॐ यमाद्यष्टाङ्गयोगयुजे नमः
ॐ यन्त्रिताघौघसंचारायै नमः
ॐ यमलोकनिवारिण्यै नमः
ॐ यातायातप्रशमन्यै नमः
ॐ यातनानामकृन्तन्यै नमः
ॐ यामिनीशहिमाच्छोदाय नमः
ॐ युगधर्मविवर्जितायै नमः
ॐ रेवत्यै नमः ८४०

ॐ रतिकृते नमः
ॐ रम्यायै नमः
ॐ रत्नगर्भायै नमः
ॐ रमायै नमः
ॐ रतये नमः
ॐ रत्नाकरप्रेमपात्राय नमः
ॐ रनज्ञायै नमः
ॐ रसरूपिण्यै नमः
ॐ रत्नप्रासादगर्भायै नमः
ॐ रमणीयतरङ्गिण्यै नमः ८५०

ॐ रत्नार्चिषे नमः
ॐ रुद्ररमण्यै नमः
ॐ रागद्वेषविनाशिन्यै नमः
ॐ रमायै नमः
ॐ रामायै नमः
ॐ रम्यरूपायै नमः
ॐ रोगिजीवातुरूपिण्यै नमः
ॐ रुचिकृते नमः
ॐ रोचिन्यै नमः
ॐ रम्यायै नमः ८६०

ॐ रुचिरायै नमः
ॐ रोगहारिण्यै नमः
ॐ राजहंसायै नमः
ॐ रत्नवत्यै नमः
ॐ राजत्कल्लोलराजिकायै नमः
ॐ रामणीयकरेखायै नमः
ॐ रुजारये नमः
ॐ रोगशोषिण्यै नमः
ॐ राकायै नमः
ॐ रङ्कार्तिशमन्यै नमः ८७०

ॐ रम्यायै नमः
ॐ रोलम्बराविण्यै नमः
ॐ रागिण्यै नमः
ॐ रञ्जिताशिवायै नमः
ॐ रूपलावण्यशेवधये नमः
ॐ लोकप्रसुवे नमः
ॐ लोकवन्द्यायै नमः
ॐ लोलत्कल्लोलमालिन्यै नमः
ॐ लीलावत्यै नमः
ॐ लोकभूमये नमः ८८०

ॐ लोकलोचनचन्द्रिकायै नमः
ॐ लेखस्रवन्त्यै नमः
ॐ लटभायै नमः
ॐ लघुवेगायै नमः
ॐ लघुत्वहृते नमः
ॐ लास्यत्तरङ्गहस्तायै नमः
ॐ ललितायै नमः
ॐ लयभङ्गिगायै नमः
ॐ लोकबन्धवे नमः
ॐ लोकधात्र्यै नमः ८९०
ॐ लोकोत्तरगुणोर्जितायै नमः
ॐ लोकत्रयहितायै नमः
ॐ लोकायै नमः
ॐ लक्ष्म्यै नमः
ॐ लक्षणलक्षितायै नमः
ॐ लीलायै नमः
ॐ लक्षितनिर्वाणायै नमः
ॐ लावण्यमृतवर्षिण्यै नमः
ॐ वैश्वानर्यै नमः
ॐ वासवेड्यायै नमः ९००

ॐ वन्ध्यत्वपरिहारिण्यै नमः
ॐ वासुदेवाङ्घ्रिरेणुघ्न्यै नमः
ॐ वज्रिवज्रनिवारण्यै नमः
ॐ शुभावत्यै नमः
ॐ शुभफलायै नमः
ॐ शान्त्यै नमः
ॐ शान्तनुवल्लभायै नमः
ॐ शूलिन्यै नमः
ॐ शैशववयसे नमः । ९०९
ॐ शीतलामृतवाहिन्यै नमः
ॐ शोभावत्यै नमः
ॐ शीलवत्यै नमः
ॐ शोषिताशेषकिल्बिषायै नमः
ॐ शरण्यायै नमः
ॐ शिवदायै नमः
ॐ शिष्टायै नमः
ॐ शरजन्मप्रसवे नमः
ॐ शिवायै नमः
ॐ शक्तये नमः
ॐ शशाङ्कविमलायै नमः ९२०

ॐ शमनस्वसृसंमतायै नमः
ॐ शमायै नमः
ॐ शमनमार्गघ्न्यै नमः
ॐ शितिकण्टमहाप्रियायै नमः
ॐ शुचये नमः
ॐ शुचिकर्यै नमः
ॐ शेषायै नमः
ॐ शेषशायिपदोद्भवायै नमः
ॐ श्रीनिवासश्रुतये नमः
ॐ श्रद्धायै नमः ९३०
ॐ श्रीमत्यै नमः
ॐ श्रियै नमः
ॐ शुभव्रतायै नमः
ॐ शुद्धविद्यायै नमः
ॐ शुभावर्तायै नमः
ॐ श्रुतानन्दायै नमः
ॐ श्रुतिस्तुतये नमः
ॐ शिवेतरघ्न्यै नमः
ॐ शवर्यै नमः ९३९
ॐ शाम्बरीरूपधारिण्यै नमः

ॐ श्मशानशोधन्यै नमः
ॐ शान्तायै नमः
ॐ शश्वते नमः
ॐ शतधृतिस्तुतायै नमः
ॐ शालिन्यै नमः
ॐ शालिशोभाढ्यायै नमः
ॐ शिखिवाहनगर्भभृते नमः
ॐ शंसनीयचरित्रायै नमः
ॐ शातिताशेषपातकायै नमः
ॐ षड्गुणैश्वर्यसम्पन्नायै नमः ५०
ॐ षडङ्गश्रुतिरूपिण्यै नमः
ॐ पण्ढताहारिसलिलायै नमः
ॐ अष्टायन्नदनदीशतायै नमः
ॐ सरिद्वरायै नमः
ॐ सुरसायै नमः
ॐ सुप्रभायै नमः
ॐ सुरदीर्घिकायै नमः
ॐ स्वःसिन्धवे नमः
ॐ सर्वदुःखघ्न्यै नमः ९५९
ॐ सर्वव्याधिमहौषधायै नमः

ॐ सेव्यायै नमः
ॐ सिद्धये नमः
ॐ सत्यै नमः
ॐ सूक्तये नमः
ॐ स्कन्दसुवे नमः
ॐ सरस्वत्यै नमः
ॐ सम्पत्तरङ्गिण्यै नमः
ॐ स्तुत्यायै नमः
ॐ स्थाणुमौलिकृतालयायै नमः
ॐ स्थैर्यदायै नमः ९७०
ॐ सुभगायै नमः

ॐ सौख्यायै नमः
ॐ स्त्रीसौभाग्यदायिन्यै नमः
ॐ स्वर्गनिःश्रेणिकायै नमः
ॐ सूक्ष्मायै नमः
ॐ स्वधायै नमः
ॐ स्वाहायै नमः
ॐ सुधाजलायै नमः
ॐ समुद्ररूपिण्यै नमः
ॐ स्वर्ग्यायै नमः ९८०
ॐ सर्वपातकवैरिण्यै नमः
ॐ स्मृताघहारिण्यै नमः

ॐ सीतायै नमः
ॐ संसाराब्धितरण्डिकायै नमः
ॐ सौभाग्यसुन्दर्यै नमः
ॐ सन्ध्यायै नमः
ॐ सर्वसारसमन्वितायै नमः
ॐ हरप्रियायै नमः
ॐ हृषीकेश्यै नमः
ॐ हंसरूपायै नमः ९९०
ॐ हिरण्मय्यै नमः
ॐ हृताघसंघायै नमः
ॐ हितकृते नमः
ॐ हेलायै नमः
ॐ हेलाघगर्वहृते नमः
ॐ क्षेमदायै नमः
ॐ क्षालिताघौघायै नमः
ॐ क्षुद्रविद्राविण्यै नमः
ॐ क्षमायै नमः १०००

इति श्रीकाशीखण्डोक्ता गङ्गासहस्रनामावलिः समाप्ता । *

श्रीगङ्गाष्टोत्तरशतनामावलिः

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

ॐ गङ्गायै नमः

ॐ विष्णुपादाब्जसंभूतायै नमः

ॐ हरवल्लभायै नमः

ॐ हिमाचलेन्द्रतनयायै नमः

ॐ गिरिमण्डलगामिन्यै नमः

ॐ तारकारातिजनन्यै नमः

ॐ सगरात्मजतारिकायै नमः

ॐ सरस्वतीसमायुक्तायै नमः

ॐ सुघोषायै नमः

ॐ सिन्धुगामिन्यै नमः

ॐ भागीरथ्यै नमः

ॐ भाग्यवत्यै नमः

ॐ भगीरथरथानुगायै नमः

ॐ त्रिविक्रमपदोद्भूतायै नमः

ॐ त्रिलोकपथगामिन्यै नमः
ॐ क्षीरशुभ्रायै नमः
ॐ बहुक्षीरायै नमः
ॐ क्षीरवृक्षसमाकुलायै नमः
ॐ त्रिलोचनजटावासायै नमः
ॐ ऋणत्रयविमोचिन्यै नमः
ॐ त्रिपुरारिशिरश्चूडायै नमः
ॐ जाह्नव्यै नमः
ॐ नतभीतिहृते नमः
ॐ अव्ययायै नमः

ॐ नयनानन्ददायिन्यै नमः
ॐ नगपुत्रिकायै नमः
ॐ निरंजनायै नमः
ॐ नित्यशुद्धायै नमः
ॐ नीरजालिपरिष्कृतायै नमः
ॐ सावित्र्यै नमः
ॐ सलिलावाशायै नमः
ॐ सागराम्बुसमेधिन्यै नमः
ॐ रम्यायै नमः
ॐ बिन्दुसरसे नमः

ॐ अव्यक्तायै नमः
ॐ वृन्दारकसमाश्रितायै नमः
ॐ उमासपत्न्यै नमः
ॐ शुभ्राङ्ग्यै नमः
ॐ श्रीमत्यै नमः
ॐ धवलाम्बरायै नमः
ॐ आखण्डलवनावासायै नमः
ॐ खण्डेन्दुकृतशेखरायै नमः
ॐ अमृताकारसलिलायै नमः
ॐ लीलालंघितपर्वतायै नमः

ॐ विरिंचिकलशावासायै नमः
ॐ त्रिवेण्यै नमः
ॐ त्रिगुणात्मिकायै नमः
ॐ संगताघौघशमंन्यै नमः
ॐ शंखदुन्दुभिनिस्वनायै नमः
ॐ भीतिहृते नमः
ॐ भाग्यजनन्यै नमः
ॐ भिन्नब्रह्माण्डदर्पिण्यै नमः
ॐ नन्दिन्यै नमः
ॐ शीघ्रगायै नमः

ॐ सिद्धायै नमः
ॐ शरण्यायै नमः
ॐ शशिशेखरायै नमः
ॐ शाङ्कार्यै नमः
ॐ शफरीपूर्णायै नमः
ॐ भर्गमूर्धकृतालयायै नमः
ॐ भवप्रियायै नमः
ॐ सत्यसंधप्रियायै नमः
ॐ हंसस्वरूपिण्यै नमः
ॐ भगीरथसुतायै नमः

ॐ अनन्तायै नमः
ॐ शरच्चन्द्रनिभाननायै नमः
ॐ ओङ्काररूपिण्यै नमः
ॐ अतुलायै नमः
ॐ क्रीडाकल्लोलकारिण्यै नमः
ॐ स्वर्गसोपानसरण्यै नमः
ॐ सर्वदेवस्वरूपिण्यै नमः
ॐ अंभः प्रदायै नमः
ॐ दुःखहन्त्र्यै नमः
ॐ शान्तिसंतानकारिण्यै नमः

ॐ दारिद्र्यहन्त्र्यै नमः
ॐ शिवदायै नमः
ॐ संसारविषनाशिन्यै नमः
ॐ प्रयागनिलयायै नमः
ॐ सीतायै नमः
ॐ तापत्रयविमोचिन्यै नमः
ॐ शरणागतदीनार्त्तपरित्राणायै नमः
ॐ सुमुक्तिदायै नमः
ॐ सिद्धयोगनिषेवितायै नमः
ॐ पापहन्त्र्यै नमः
ॐ पावनाङ्ग्यै नमः
ॐ परब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः
ॐ पूर्णायै नमः
ॐ पुरातनायै नमः
ॐ पुण्यायै नमः
ॐ पुण्यदायै नमः
ॐ पुण्यवाहिन्यै नमः
ॐ पुलोमजार्चितायै नमः
ॐ पूतायै नमः

ॐ पूतत्रिभुवनायै नमः
ॐ जपायै नमः
ॐ जङ्गमायै नमः
ॐ जङ्गमाधारायै नमः
ॐ जलरूपायै नमः
ॐ जगद्धितायै नमः
ॐ जह्नुपुत्र्यै नमः
ॐ जगन्मात्रे नमः

ॐ जम्बूद्वीपविहारिण्यै नमः
ॐ भवपत्न्यै नमः
ॐ भीष्ममात्रे नमः
ॐ सिद्धायै नमः
ॐ रम्यायै नमः
ॐ उमाकरकमलसंजातायै नमः
ॐ अज्ञानतिमिरभानवे नमः

इति श्रीगङ्गाष्टोत्तरशतनामावली समाप्ता ।

स्कन्दपुराणोक्तं गङ्गास्तोत्रम्

ब्रह्मोवाच—

नमः शिवायै गङ्गायै शिवदायै नमोनमः ।
नमस्ते रुद्ररूपिण्यै शाङ्कर्यै ते नमोनमः ॥ १ ॥
नमस्ते विश्वरूपिण्यै ब्रह्ममूर्त्यै नमोनमः ।
सर्वदेवस्वरूपिण्यै नमो भेषजमूर्तये ॥ २ ॥
सर्वस्य सर्वव्याधीनां भिषक्श्रेष्ठ्यै नमोस्तु ते ।
स्थाणुजङ्गमसंभूतविषहन्त्र्यै नमोनमः ॥ ३ ॥
भोगोपभोगदायिन्यै भोगवत्यै नमोनमः ।

मन्दाकिन्यै नमस्तेस्तु स्वर्गदायै नमः सदा ॥ ४ ॥

नमस्त्रैलोक्यभूषायै जगद्धात्र्यै नमोनमः ।
नमस्त्रिशुक्लसंस्थायै तेजोवत्यै नमोनमः ॥ ५ ॥
नन्दायै लिङ्गधारिण्यै नारायण्यै नमोनमः ।
नमस्ते विश्वमुख्यायै रेवत्यै ते नमोनमः ॥ ६ ॥
बृहत्यै ते नमस्तेस्तु लोकधात्र्यै नमोनमः ।
नमस्ते विश्वमित्रायै नन्दिन्यै ते नमोनमः ॥ ७ ॥
पृथ्व्यै शिवामृतायै च सुवृषायै नमोनमः ।
शान्तायै च वरिष्ठायै वरदायै नमोनमः ॥ ८ ॥
उस्रायै सुखदोग्ध्र्यै च संजीविन्यै नमोनमः ।

ब्रह्मिष्ठायै ब्रह्मदायै दुरितघ्न्यै नमोनमः ॥ ९ ॥

प्रणतार्तिप्रभञ्जिन्यै जगन्मात्रे नमोस्तु ते ।
सर्वापत्प्रतिपक्षायै मङ्गलायै नमोनमः ॥ १० ॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे ।
सर्वस्यार्तिहरे देवि नारायणि नमोस्तु ते ॥ ११ ॥
निर्लेपायै दुर्गहन्त्र्यै दक्षायै ते नमोनमः ।
परात्परतरे तुभ्यं नमस्ते मोक्षदे सदा ॥ १२ ॥
गङ्गे ममाग्रतो भूया गङ्गे मे देवि पृष्ठतः ।
गङ्गे मे पार्श्वयोरेहि त्वयि गङ्गेऽस्तु मे स्थितिः ॥ १३ ॥
आदौ त्वमन्ते मध्ये च सर्वं त्वं गां गते शिवे ।
त्वमेव मूलप्रकृतिस्त्वं हि नारायणः परः ॥ १४ ॥

गङ्गे त्वं परमात्मा च शिवस्तुभ्यं नमः शिवे ॥ १५ ॥

यं इदं पठति स्तोत्रं भक्त्या नित्यं नरोऽपि यः ।
शृणुयाच्छ्रद्धया युक्तः कायवाक्चित्तसंभवैः ॥ १६ ॥
दशधा संस्थितैर्दोषैः सर्वैरेव प्रमुच्यते ।
सर्वान्कामानवाप्नोति प्रेत्य ब्रह्मणि लीयते ॥ १७ ॥
ज्येष्ठे मासि सिते पक्षे दशमी हस्तसंयुता ।
तस्यां दशम्यामेतच्च स्तोत्रं गङ्गाजले स्थितः ॥ १८ ॥
यः पठेद्दशकृत्वस्तु दरिद्रो वापि चाक्षमः ।
सोऽपि तत्फलमाप्नोति गङ्गां संपूज्य यत्नतः ॥ १९ ॥
अदत्तानामुपादानं हिंसा चैवाविधानतः ।

परदारोपसेवा च कायिकं त्रिविधं स्मृतम् ॥ २० ॥

पारुष्यमनृतं चैव पैशुन्यं चापि सर्वशः।
असंबद्धप्रलापश्च वाङ्मयं स्याच्चतुर्विधम् ॥ २१ ॥
परद्रव्येष्वभिध्यानं मनसाऽनिष्टचिन्तनम्।
वितथाभिनिवेशश्च मानसं त्रिविधं स्मृतम् ॥ २२ ॥
एतानि दशपापानि हर त्वं मम जाह्नवि।
दशपापहरा यस्मात्तस्माद्दशहरा स्मृता ॥ २३ ॥
त्रयस्त्रिंशच्छतं पूर्वान्पितॄनथ पितामहान्।
उद्धरत्येव संसारान्मन्त्रेणानेन पूजिता ॥ २४ ॥
नमो भगवत्यै दशपापहरायै गङ्गायै नारायण्यै,
रेवत्यै शिवायै दक्षायै अमृतायै विश्वरूपिण्यै
नन्दिन्यै ते नमोनमः।

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां

करधृतकलशोद्यत्सोत्पलामत्यभीष्टाम् ।
विधिहरिहररूपां सेन्दुकोटोरजुष्टां
कलितसितदुकूलां जाह्नवीं तां नमामि ॥ २५ ॥

आदावादिपितामहस्य निगमव्यापारपात्रे जलं
पश्चात्पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनम् ।
भूयं शंभुजटाविभूषणमणिर्जह्नोर्महर्षेरियं
देवीकल्मषनाशिनी भगवती भागीरथी दृश्यते ॥२६॥

गङ्गागङ्गेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि ।
मुच्यते सर्वपापेभ्यो विष्णुलोकं स गच्छति ॥ २७ ॥

इति स्कन्दपुराणोक्तं गङ्गास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।